सं गो वि । एफ़ बी । 187-85 | 480 98. — चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै व जैको स्टील फास्टनर्स प्राव लिं । 269 | 24, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री यशवन्त सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, ग्रीडोगिक विवाद शिंधितियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई ग्रिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी शिक्षसूचना सं 5415—3—श्रम—68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं 11495—जी—श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रिधित्यम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे बिखा नामला न्यायनिर्धय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादशस्त मामला है श्रा विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री यशवन्त सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित बथा ठीक है ? यदि नहीं, तो बह किस राहत का हकदार है ?

सं श्री वि । यमुना | 80-85 | 48105 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं सूद मैटल इण्डस्ट्रीज, जगाधरी, के श्रीमक श्री बिहारी शर्मा तथा उसके प्रबुन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद में है:

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यवाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खुण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई भिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्य न इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिन्यना सं० 3(44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रप्रैंन, 1984, द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला, की विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायितर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या उससे सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :

क्या श्री बिहारी गर्भा की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रों० वि०/सोनीपत/36-85/48111.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० (1) मुख्य वनपाल, हरियाणा, चण्डीगढ़, (2) डिविजनल फीरेस्ट ग्राफिसर, सोनीपत, के श्रमिक श्री कृष्ण कुमार तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब अौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641-1-अम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ पठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, रोहतक, को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय निर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री कृष्ण कुमार की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो॰वि०/सोनीपत/36-85/48119. चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै॰ (1) मुख्य वनपाल, हरियाणा, चण्डीगढ़, (2) डिविजनल फौरेस्ट ग्राफिसर, सोनीपत, के श्रीमिक श्री॰ तुही राम तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, अब, अौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हिरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641-1-अम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ पठित संर्कारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हित निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्यों श्री तहीं राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है।